बी.एस.आर. बाबू

मंडोली: दिल्ली स्थित परवर्ती हड़प्पाकालीन बस्ती*

नंदनगरी के निकट यमुना नदी के बाएँ तट पर बसा मंडोली (28°42'N 2°19'E) एक छोटा-सा गाँव है। जो दिल्ली रेलवे स्टेशन से 16 किलोमीटर दूर दिल्ली-गाजियाबाद राजमार्ग पर स्थित है। मंडोली के दक्षिण-पश्चिम में एवं सबोली गाँव के दक्षिण में प्राचीनकालीन टीला स्थित है। इस स्थल के उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी भागों को छोड़कर बाकी भागों पर अब आधुनिक गाँव बस गया है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार के पुरातत्त्व विभाग द्वारा कुछ समय पूर्व किए गए अनुसंधानों से यह पता चला है कि परवर्ती हड़प्पाकाल से लेकर परवर्ती इतिहास काल के बीच यह स्थल आबाद रहा था। सतह पर मिले साक्ष्यों के आधार पर दो बार सन् 1987-88 तथा सन् 1988-89 की अवधि के बीच इस लेखक की देख-रेख में इस स्थल पर खुदाइयाँ कराई गईं। इन खुदाइयों के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

i) परवर्ती हड़प्पाकालीन तत्त्व की प्रकृति एवं इसके विस्तार की जाँच-पड़ताल करना।

ii) इस क्षेत्र में धूसर मृद्भांडों (मिट्टी के बरतनों) की प्रसार सीमा का पता लगाना, तथा

iii) इस स्थल की सांस्कृतिक क्रमबद्धता सुनिश्चित करना।

इस स्थल पर प्राप्त भौतिक अवशेषों के आधार पर इन निक्षेपों (deposits) को पाँच सांस्कृतिक कालखंडों में वर्गीकृत किया गया है। ये कालखंड निम्नलिखित हैं-

कालखंड-I	–	परवर्ती हड़प्पाकालीन
कालखंड-II	–	धूसर रंग में रँगे बरतनों (मृद्भांडों) का काल

* सी. मार्गबंधु एवं के.एस. रामचंद्रन (संपादित), *स्पेक्ट्रम ऑफ इंडियन कल्चर*, आगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ. 98-101 से संकलित।

कालखंड-III – काले स्लिपवाले भांडों का काल
कालखंड-IV – शुंग-कुषाण काल
कालखंड-V – गुप्त काल
प्रत्येक कालखंड की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

कालखंड-I

इस स्थल पर सबसे शुरुआती और सबसे निचले तल में परवर्ती हड़प्पाकालीन बस्ती पाई गई है। यह आवास-स्थल आकार में छोटा-सा लगता है, क्योंकि यहाँ किसी भी तरह के संरचनात्मक अवशेष जैसे मकानों के समूह आदि का पता नहीं चलता है। कुछ खंदकों में पाए गए, पीले रंग की मिट्टी को कूट-कूटकर बनाए गए फर्श में लकड़ी के खंभों को लगाने के लिए बनाए गए वृत्ताकार एवं चंद्राकार गर्तों (गड्ढों) के निशान हमें परवर्ती हड़प्पाकालीन आवासीय संरचना की जानकारी देते हैं। इस बात पर ध्यान देना दिलचस्प है कि इस मिट्टी के फर्श पर मिट्टी को पकाकर बनाई गई एक वस्तु मिली है। यह वस्तु जली हुई अवस्था में है और इसकी बनावट अनगढ़-सी है। इसके साथ राख के अंश भी मिले हैं। यह जगह भट्ठी का अवशेष हो सकती है।

इस स्तर पर प्राप्त छोटे-छोटे टुकड़ों को मिलाकर पुनर्निर्माण करने पर मृद्भांडों की जो आकृतियाँ मिलती हैं उनमें मर्तबानों एवं कलशों की आकृतियाँ प्रमुख हैं। मर्तबानों की आकृति तल में सँकरी एवं ऊपर बाहर की ओर तिरछे फैली हुई है या फिर इनके किनारे पर मनकों की संरचना है तथा कलश का तल गोल-चिपटा है। इस काल में बाढ़ आने एवं पानी का जमाव होने से इस स्थल पर मिले सभी टुकड़ों पर क्षरण के निशान मिले हैं। यह निष्कर्ष इस प्रमाण से भी पुष्ट होता है कि पानी के द्वारा लाई गई 30 सेंटीमीटर से 35 सेंटीमीटर मोटी गाद एवं बालू की परत इस परवर्ती हड़प्पाकालीन बस्ती के ठीक ऊपर फैली है। सभी मृद्भांडों को तेजी से घूमने वाली चाक पर बनाया गया था। इन बरतनों को अच्छी तरह मिट्टी को सानकर बनाया गया था। इसकी बनावट सुंदर एवं मजबूत थी। इन्हें भट्ठी में पकाकर बनाया गया था और कुछ मामलों में इनपर हल्के लाल रंग की चिकनी मिट्टी (slip) की परत चढ़ाई गई थी।

इस कालखंड के पुरावशेषों में एक द्वि-शंकु (bi-conical) मनका और एक मिट्टी का बना गोलाकार सिलबट्टा (cake) प्रमुख हैं।

कालखंड-II

थोड़े अंतराल के बाद धूसर रंग में रँगे बरतनों का इस्तेमाल करने वाले लोगों द्वारा यह स्थल पुनः आबाद हो गया। इन बरतनों की बनावट अत्यंत ही उत्कृष्ट है और इनमें पीले से लेकर गहरे धूसर रंगों का इस्तेमाल हुआ है। अधिकांश बरतन चाक पर बनाए गए

हैं। सबसे सामान्य आकृतियाँ कटोरे एवं थालियों की हैं। इनके किनारे सीधे खड़े या उन्नतोदर होते थे। इन्हें सरल आकृतियों जैसे-बिंदुओं, डैश, छल्ले, बाहर से केंद्र की ओर छोटे होते जाते यानी संकेंद्रित वृत्त (concentric circles), लहरदार रेखाएँ तथा ब्रश के हल्के स्पर्श आदि से सजाया गया था। इनके लिए सामान्यतया काले रंग का इस्तेमाल किया गया था। कुछ मामलों में बरतन को भीतर एवं बाहर दोनों ओर लालिमा लिए भूरे रंग से रँगा गया था और इन पर कुछ काली लहरदार रेखाएँ खिंची गई थीं। इनके साथ ही यहाँ मिला एक गाढ़े धूसर रंग का अच्छी तरह पकाकर बनाए गए अत्यंत उत्कृष्ट बनावट वाले कटोरे का टुकड़ा भी द्रष्टव्य है। इस टुकड़े के किनारे पर हल्के लाल रंग की मोटी-सी पट्टी क्षैतिज रूप से खींची गई थी। इसका संबंध अत्यंत पतले धूसर मृद्भांडों एवं लाल मृद्भांडों से है। धूसर मृद्भांडों के प्रकार के मृद्भांड हस्तिनापुर, मथुरा, अतरंजीखेड़ा तथा कौशांबी में भी प्राप्त हुए हैं। रिहाइशी अवशेषों के नाम पर मिट्टी को कूट-कूट कर बनाए गए फर्श एवं लकड़ी के खंभों को गाड़ने के लिए बनाए गए गर्त भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण पुरावशेषों में प्रमुख हैं - मिट्टी को पकाकर बनाई गई पशुओं की लघु मूर्तियाँ, घट (घड़ा) के आकार के माला के दाने, किनारों को सजाकर बनाई गई चकत्तियाँ (discs), पिरामिड के आकार के खोखले हाथी दाँत की बनी कलाकृतियाँ, हाथी दाँत के बटन, गोमेद पर पट्टी बनाकर बनाए गए माला के दाने। इनके अतिरिक्त कारविलियन माला के दाने पर उरेह कर (etch) किए गए काम, सुरमे (antimony) वाली सींक, ताँबे की नखकतरनी तथा लोहे को शुद्ध करने की प्रक्रिया में बचे कुछ धातुमल (slags) भी प्राप्त हुए हैं।

कालखंड-III

इस काल का प्रतिनिधित्व काली चिकनी मिट्टी के बरतनों (black slipped ware) का इस्तेमाल करने वाले लोग करते हैं। ये लोग सादे लाल रंग के बरतनों तथा काले एवं लाल रंग के बरतनों का उपयोग भी करते थे। मिट्टी की बनी वस्तुओं में कटोरे, कलश, मर्तबान, थालियाँ, बेसिनें आदि प्रमुख हैं। पूर्व काल में इस्तेमाल होनेवाला मिट्टी का फर्श इस काल में भी प्रचलित था।

मिट्टी को पकाकर बनाई गई पशु एवं मानव लघु मूर्तियाँ, मनके, गोल-चपटी चक्रिकाएँ (discs), सीप की बनी चूड़ियाँ, कर्णफूल आदि इस कालखंड से प्राप्त कुछ महत्त्वपूर्ण पुरावशेष हैं।

कालखंड-IV

इस कालखंड को दो उपकालों-कालखंड-IV 'क' शुंगकाल तथा IV 'ख' कुषाण काल में विभाजित किया जा सकता है।

कालखंड-IV 'क': शुंगकाल

इस काल की विशिष्टताएँ हाथ से बने साधारण बनावट वाले मिट्टी के बरतन तथा चाक पर बने लाल रंग की मिट्टी के बरतन हैं। इनकी बनावट घटिया से लेकर मध्यम दर्जे तक की है। इन बरतनों के किनारों पर कोई खास चित्रण नहीं है। इन पर किए गए छापे तथा उत्कीर्णन के काम हमें *अहिक्षत्र* शैली की याद दिलाते हैं।

मिट्टी को पकाकर बनाई गई पशुओं की लघु मूर्तियाँ, मुहरा (gamesman), सीप से बने सामान, कर्णफूल, मछली पकड़ने के जाल में बाँधे जाने वाले वजन आदि कुछ ऐसे प्रमुख पुरावशेष हैं जो इस संस्तर पर पाए गए हैं।

मिट्टी के लोंदे वाला मकान-समूह एक खंदक में नजर आया है। इस ढाँचे के ऊपर कुषाणकालीन पकी ईंटों का ढाँचा दिखाई पड़ा जो एक परवर्ती सह-काल का संकेत करता है।

कालखंड-IV 'ख': कुषाण काल

कुषाण काल का संकेत पकी ईंटों से भलीभाँति निर्मित मकान करते हैं। यहाँ मिले एक मकान-समूह में 33 × 22 × 6; 31 × 22 × 5; 32 × 21 × 6 सेंटीमीटर आकार की ईंटों का इस्तेमाल किया गया था। इसमें मिट्टी और चूने से बने दो तल (floor) पाए गए हैं। इनमें से एक में चूल्हा भी पाया गया है। यहाँ यह देखना भी दिलचस्प है कि खंदक में पकाकर बनाई ईंटों की बनी एक संरचना के ठीक नीचे मिट्टी से बनी ईंटें भी पाई गई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में मंडोली एक संपन्न नगर रहा होगा।

उत्खनन से काफी संख्या में पुरावशेष प्रकाश में आए हैं। इनमें कुछ प्रमुख हैं – अत्यंत कलात्मक रूप से गढ़ी कामोत्तेजक मुद्राओं वाली नारी मूर्तियाँ, वासुदेव II से संबद्ध ताँबे के सिक्के और एक कलश का किनारे का भाग जिस पर कुषाण-ब्राह्मी लिपि चिह्नों को उकेरा गया है। इनके अतिरिक्त मिट्टी को पकाकर बनाई गई मनुष्यों और पशुओं की लघु मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। अन्य दूसरे पुरावशेषों में प्रमुख हैं – कम मूल्यवान पत्थरों से बने मनके, सीपियों से बने पदार्थ, मिट्टी को पकाकर बनाया गया साहुल (dabbers), ताँबे की बनी अँगूठियाँ, लोहे की वस्तुएँ जैसे तीर का अग्रभाग, हँसिया और माला इत्यादि।

मिट्टी को पकाकर बनाई गई वस्तुओं में प्रमुख हैं-नौतली बंदी (carinated bandis), टोंटीदार बरतन, टोंटियाँ तथा अन्य लघु आकार के बरतन।

कालखंड-V

अंततोगत्वा यह टीला गुप्तवंश के शासकों के आधिपत्य में आ गया। ऐसा यहाँ प्राप्त

इस काल की विशिष्टता वाले खास तरह के लाल रंग के पॉलिशदार बरतनों तथा समकालीन संबंध दर्शाने वाली अन्य वस्तुओं से प्रमाणित होता है। अन्य प्रमुख प्राप्ति है – अच्छी तरह पकाकर बनाई गई मिट्टी की एक मुहर जिस पर गुप्त-ब्राह्मी लिपि चिह्नों में कुछ पंक्तियाँ उकेरी हुई हैं। इसके ऊपर एक शंख लगाकर इसे सजाया गया है। मिट्टी की शिल्पकृतियों में प्रमुख हैं – साँचे में ढालकर बनाई गई लाल चिकनी मिट्टी की टोटियाँ (spouts), अंदर की ओर मुड़े किनारों वाले कटोरे जिनके कोर बाहर की ओर उभरे हुए (incurved) हैं।

इस स्थल का महत्त्व

मंडोली दिल्ली क्षेत्र में स्थित एक महत्त्वपूर्ण प्रागैतिहासिक स्थल है। यहाँ धूसर मृद्भांड (PGW) संस्कृति तथा परवर्ती हड़प्पाकालीन संस्कृति दोनों के ही अवशेष मिले हैं। दिल्ली तथा इसके आसपास स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण धूसर मृद्भांड स्थल तथा परवर्ती हड़प्पाकालीन स्थल मानचित्रों में दर्शाए गए हैं।

दिल्ली में पहली बार स्तरीकृत (stratified layers) स्तर में धूसर रंग में रँगे मिट्टी के बरतनों की प्राप्ति द्रष्टव्य है। यह साक्ष्य दर्शाता है कि प्राचीन दिल्ली के लोग निकटवर्ती बस्तियों जैसे हस्तिनापुर, सोनीपत, पानीपत, इन्द्रपत, तिलपत, मथुरा इत्यादि के संपर्क में थे। इस काल की मृत्तिका शिल्प (ceramics) के अन्य स्थलों की मृत्तिका शिल्प से समानता के आधार पर मंडोली के कालखंड-II को हम 1100 ई.पू. तथा 600 ई.पू. के बीच रख सकते हैं।

ठीक इसी प्रकार पहली बार इस स्तर के स्तरीकृत परतों में परवर्ती हड़प्पाकालीन मृद्भांडों की प्राप्ति महत्त्वपूर्ण है। एक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि परवर्ती हड़प्पा सभ्यता के स्थलों के विस्तार स्वरूप में इन लोगों का बड़े स्तर पर पश्चिम से पूरब की ओर विस्थापन हुआ था। इससे हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के स्थलों की संख्या में बहुत अधिक बढ़ोतरी हुई थी। केवल उत्तर प्रदेश में ही करीब 120 स्थल हैं जो सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ और बुलंदशहर जिलों में यमुना नदी एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे फैले हैं। अत: यह माना जा सकता है कि पश्चिम से होनेवाले विस्थापन के दौरान बनी बस्तियों में मंडोली भी एक बस्ती हो सकती है। हालाँकि परवर्ती हड़प्पाकालीन बस्तियों का गंगा-यमुना दोआब में बड़े स्तर पर विस्तार हुआ है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस काल में अधिकांश हड़प्पाई सांस्कृतिक विशेषताएँ लुप्त हो गईं। हड़प्पाकालीन सभ्यता की एकरूपता बाद की अवस्था में विविध रूपों में विस्तारित हो गई। ऐसा होने पर कुछ क्षेत्रीय विशेषताएँ भी प्रकट हुईं। यहाँ से एक क्रमिक रूपांतरण होता है जिसे हम परवर्ती हड़प्पाकालीन संस्कृति की बस्तियों की व्यवस्था एवं बरतनों की बनावट में देख सकते हैं। यदि हम कुछ स्थलों जैसे-कसेरी, अंबखेड़ी, आलमगीरपुर, हुलास, अतरंजीखेड़ा, बहादराबाद इत्यादि का अध्ययन करें तो इस पहलू

को भलीभाँति देख सकते हैं। मंडोली का अध्ययन हमें अलग-अलग नहीं वरन् विस्थापन की प्रक्रिया में स्थापित हुए अनेक केंद्रों में से एक के रूप में ही करना चाहिए।

मंडोली में परवर्ती हड़प्पाकाल की अवधि को हम अनुमानतः 1500 ई.पू. से 1200 ई.पू. के बीच रख सकते हैं। ऐसा हम उसी काल के दिल्ली एवं उसके आस-पास के परवर्ती हड़प्पाकालीन स्थलों पर इस्तेमाल होने वाले मृद्भांडों के आधार पर कर सकते हैं।

बी.एस.आर. बाबू

भोरगढ़ (28'5° अक्षांश उ. अ
किलोमीटर की दूरी पर उत्तर की
यह टीला स्थित है। यह नरेला रेल
का दिल्ली से सड़क मार्ग द्वारा

प्रारंभ में यह टीला कई एकड़
को काट-काट कर खेती योग्य ब
ही बाकी बच गया। इस टीले के
चारों ओर खेती की गई है। टीले
मीटर तथा उत्तर से दक्षिण में 100
लगभग 180 सेंटीमीटर का है। ए
थी पर अब उसने रास्ता बदल लि
गाँव के पूरब में प्राचीन टीले के
के पीछे बस स्टॉप के करीब है। इ
स्थल पर ही बसा हुआ है।

दिल्ली राज्य सरकार के पुरात
स्थल पर उत्खनन (खुदाई) का
सत्रों के दौरान करवाया। इन उत्
दिखाई पड़ा है। यह विकास परव
लगभग ढाई हजार वर्षों के समय
कालखंडों की स्पष्ट पहचान की

कालखंड I — परवर्ती हड़प्
कालखंड II — चित्रित धूस

* *पुरातत्त्व*, अंक 25(1994-5), पृ. 88